विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

(नोट:- कानून के अनुसार वर की उम्र 21 वर्ष या उससे अधिक तथा वधु की उम 18 वर्ष या उससे अधिक होना चाहिए।)
पास्‍टर- आइये, हम विवाह की विधि प्रारंभ करे। कृपया सभी शांतिपूर्वक अपना स्‍थान ग्रहण कर लें ताकि आराधना की गरिमा बनी रहे।

जब वधु प्रवेश करती है तो हम खड़े होकर गीत क्रमांक --------गाएंगे।
गीत- जब पहली शादी हुई1. जब पहली शादी हुईअदन में ईश्‍वर नेआशीष के वचन कहे

आदम और हवा से।

2. यों अब हमारे बीच केविवाह में ईश्‍वर है तीन आशीष देना चाहते

तेजवान पवित्र त्रय।

3. हो बालक दान के लिएप्रेम और विश्‍वस्‍तता हे प्रभु एकता दे दे

कि रहें संग सदा।

4. यह वधू तू हे पिता इस वर के हाथ में देजैसे की पत्‍नी दी थी

आदम को तू ही ने।

5. हे यीशु इनके हाथ और ह्रदय भी अब तू जोड़ और दु:ख सुख कुशल रोग में कभी उनको न छोड़। 6. और हे पवित्र आत्‍मा

तू उन पर उतर आ

कि प्रेम और मेल के साथ ये
मिल के रहें सदा।
7. बुराई से बचा के

इन का सहायक हो

1 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

और अपने स्‍वर्गीय राज्‍य में
दे जगह दोनों को।

नोट:- (वधु वर के बाएं हाथ की ओर खड़ी हो। दोनों के मुख वेदी की ओर हो।)

पास्‍टर- हम यहां परमेश्‍वर की उप‍स्थिति में इस कलीसिया के सामने एकत्रित हुए हैं कि इस युवक ----------- (नाम) और इस युवती ----------- (नाम) का पवित्र विवाह करें। यह एक प्रतिष्ठित कार्य है जिसकी स्‍थापना स्‍वयं परमेश्‍वर ने की कि मनुष्‍य अकेला न रहें
एवं उसकी शारीरिक आवश्‍यकताओं की पूर्ति परमेश्‍वर द्वारा निर्धारित सीमाओं के अन्‍तर्गत हो। प्रभु यीशु मसीह ने स्‍वयं गलील के काना नगर में सम्‍पन्‍न होने वाले विवाह में उपस्थित होकर इस कार्य को सुशोभित एवं सम्‍मानित किया। पौलुस प्रेरित भी इसकी प्रशंसा में कहता है-
‘‘

विवाह सब मनुष्‍यों में आदर की बात समझी जाये।
’’

इसलिये कोई बिना विचारे और मन के घृणित भाव से इसे अंगीकार न करे वरन् विवाह के ठहराये जाने के कारणों को सही रूप में समझ कर आदर और सचेतता और परामर्श और संयम और ईश्‍वर के भय से अंगीकार करे।
पास्‍टर वर और वधु से यों कहे -
परमेश्‍वर के न्‍याय के दिन में जब सब के मनों के भेद खोले जाएंगे, तुम्‍हें उत्‍तर देना होगा, इसलिये मैं तुम दोनो को दृढ़ आज्ञा देता हूं कि यदि व्‍यवस्‍था के अनुसार तुम लोगों के विवाह होने में कुछ बाधा हो तो उसे अभी अंगीकार करो क्‍योंकि मैं तुमसे निश्‍चय कहता हूं कि जितने ईश्‍वर के वचन की सम्‍मति के विरूद्ध विवाह में जोड़े जाते हैं वे ईश्‍वर से जोड़े हुए नहीं हैं। और उनका विवाह भी उसकी व्‍यवस्‍था के अनुसार उचित नहीं है।

वर पास्‍टर के पीछे-पीछे मंडली के सामने यों कहें-

मैं ----------- (नाम) सत्‍य कहता हूं कि ----------- (नाम) की इस युवती के

2 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

साथ व्‍यवस्‍था के अनुसार मेरा विवाह न हो ऐसी कोई बाधा मैं नहीं जानता हूं।

वधु भी पादरी के पीछे-पीछे मंडली के सामने यों कहे

–

मैं ----------- (नाम) सत्‍य कहती हूं कि --------- (नाम) के इस युवक के साथ व्‍यवस्‍था के अनुसार मेरा विवाह न हो सके ऐसी कोई बाधा मैं नहीं जानती हूं।

पास्‍टर कलीसिया से कहे – यदि कोई इस सभा में ऐसा योग्‍य कारण जानता हो जिसके कारण ये दोनों मसीही धर्म और भारत सरकार के नियमों के अनुसार इस पवित्र विवाह में नहीं जोड़े जा सकते हैं तो अभी सभों पर प्रगट करे वरना परमेश्‍वर के न्‍याय के दिन तक जबकि सभों के ह्रदय के भेद खोले जाएंगे चुप रहे।

(पास्‍टर बोलने के बाद कुछ सेकेन्‍ड्स ठहरा रहे।)

3 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

पास्‍टर- कौन इस स्‍त्री को इस पुरूष के हाथ में देता हैं? (वधु के पिता खड़े हों तथ विधिवत वधु का दाहिना
हाथ वर के दाहिने हाथ में दें।)

वर अपने दाहिने हाथ से वधु के दा‍हिने हाथ को पकड़कर पास्‍टर के

पीछे-पीछे यों कहे- मैं .... (नाम) इस सभा के लोगों को साक्षी करके कहता हूं, कि ईश्‍वर के सामने, और प्रभु यीशु ख्रीष्‍ट के नाम से, मैं तुम .... (नाम) को अपनी विवाहिता पत्नि होने को ग्रहण करता हूं, और वचन देता हूं कि दु:ख में और सुख में, सम्‍पत्ति में और दरिद्रता में, रोग में और आरोग्‍यता में, तुम्‍हें आज से आगे को अपनी कर र‍खूंगा
–

और तुमसे मिला रहूंगा
–

और जब तक मृत्‍यु हम दोनों को अलग न करे, तब तक

4 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

ईश्‍वर के पवित्र नियम के अनुसार, तुम से प्रेम रखूंगा, और तुम्‍हारी सुधि लूंगा। मैं विश्‍वासपूर्वक तुमसे यह प्रतिज्ञा करता हूं।
वधु अपने दा‍हिने हाथ से वर के दाहिने हाथ को पकड़े हुए पास्‍टर के पीछे-पीछे यों कहे-

मैं .... (नाम) इस सभा के लोगों को साक्षी करके कहती हूं, कि ईश्‍वर के सामने, और प्रभु यीशु ख्रीष्‍ट के नाम से, मैं तुम .... (नाम) को अपना विवाहित पति होने को स्‍वीकार करती हूं, और वचन देती हूं कि दु:ख में और सुख में, सम्‍पत्ति में और दरिद्रता में, रोग में और आरोग्‍यता में, तुम्‍हें आज से आगे को अपना कर रखूंगी - और तुमसे मिली रहूंगी
–

और जब तक मृत्‍यु हम दोनों को अलग न करे, तब तक ईश्‍वर के पवित्र नियम के अनुसार, मैं तुम से प्रेम

5 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

रखूंगी, और तुम्‍हारी सुधि लूंगी। मैं विश्‍वासपूर्वक तुमसे यह प्रतिज्ञा करती हूं।

(इसके पश्‍चात युवक और युवती हाथ छोड़े और अपने-अपने छल्‍ले पास्‍टर को देवें। पास्‍टर छल्‍लों को बाइबिल

पर रखकर आशीष मांगे।)

प्रार्थना – हे सनातन काल के ईश्‍वर, सारी उत्‍तम आशीषों के दाता हम इस समय

तुझसे प्रार्थना करते हैं कि जब इन युवाओं ने तेरी

6 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

वेदी के सम्‍मुख और तेरी कलीसिया की उपस्थिति में जो प्रतिज्ञाएं की हैं, ये इन्‍हें आजीवन याद रखें। विवाह के इन प्रतीक चिन्‍हों पर तेरी आशीष हो ताकि ये चिन्‍ह इन्‍हें इन प्रतिज्ञाओं का स्‍मरण दिलाते रहें। पिता परमेश्‍वर इनको हर पल यह ध्‍यान रहे कि तेरा वचन सत्‍य है, तेरी वाचा अटल है और तेरी आशीष अपरम्‍पार है यदि हम विश्‍वासयोग्‍यता का जीवन जिएं। ये प्रतीक चिन्‍ह इन्‍हें तेरी इस वाचा का स्‍मरण दिलाते रहें। इनका प्रेम और एकता तुझमें सुरक्षित रहे। तेरे नियमों के अनुसार ये जीवन व्‍यतीत करें। इस प्रार्थना को हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह के नाम से मांगते हैं। आमीन!

7 / 455

द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

(□□□□□ □□□□□□□□□ □□, □□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□ □□ □□□□□□□□□□□ □□□□) □□□□□□□□□ □□ □□□□□-□□□□□ □□ □□□□- इस छल्ले से मैं तुम्हें ब्याहता हूं, अपनी देह से मैं तुम्हारी प्रतिष्ठा करता हूं और अपनी सारी सांसारिक सम्पत्ति तुम्हें देता हूं□ पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से, आमीन!

(□□ □□□, □□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

हुए यह प्रतिज्ञा करे) पास्‍टर के पीछे-पीछे वधु कहे-

इस छल्‍ले से मै तुम्‍हें ब्‍याहती हूं, अपनी देह से मैं तुम्‍हारी प्रतिष्‍ठा करती हूं और अपनी सारी सांसारिक सम्‍पत्ति तुम्‍हें देती हूं।
पिता, पु्त्र और पवित्र आत्‍मा के नाम से, आमीन!
पास्‍टर मंडली से कहे-

जबकि.................... (नाम) और................... (नाम) विवाह में सहमत हुए हैं और ईश्‍वर और मंडली के

9 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

सामने इस बात का अंगीकार भी किया है और इस पर एक-दूसरे को अपना-अपना वचन दिया है और छल्‍ले के देने और लेने से और हाथों के मिलाने से इसे प्रगट किया है, इस कारण इस कलीसिया का सेवक होने के नाते और भारतीय क्रिश्चियन मैरिज एक्‍ट के अंतर्गत दिये गये अधिकार से मैं उनको पति और पत्नि कहता हूं- पिता, पु्त्र और पवित्र आत्‍मा के नाम से, आमीन!
जिसे ईश्‍वर ने जोड़ा है उसको कोई मनुष्‍य अलग न करे।
तब दोनों घुटने टेकें और पास्‍टर उनको आशीर्वाद दे-

10 / 455

द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

ईश्वर पिता, ईश्वर पुत्र और ईश्वर पवित्र आत्मा तुमको आशीष दे, तुमको बचाये रखे तथा तुम्हारी रक्षा करें। प्रभु अनुग्रह करके तुम पर दया दृष्टि करे और तुम्हें सब आत्मिक आशीषों से और अनुग्रह से ऐसा परिपूर्ण करे कि तुम इस लोक में एक साथ ऐसा जीवन निर्वाह करो कि परलोक में अनन्त जीवन प्राप्त करो। आमीन!

([illegible]-[illegible])

[illegible]

[illegible]-

(वेदी के सामने दो छोटी मोमबत्ती जली हुई और बीच में एक बड़ी बुझी हुई मोमबत्ती रखें)

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

पास्‍टर- ये दो अलग-अलग

मोमबत्तियां वर................... (नाम) और वधु................ (नाम) के दो भिन्‍न जीवनों का प्रतिनिधित्‍व करती हैं। अब तक इनके विचार, योजनाएं, रूचियां भिन्‍न-भिन्‍न थे। आज से ये दो नहीं किन्‍तु प्रभु में एक हुए हैं। अत: अब से ये परिवार की एकता, शांति एवं आनन्‍द हेतु स्‍वयं के लिए नहीं किन्‍तु एक-दुसरे के लिए सोचेंगे। पारस्‍परिक एकता, प्रेम, सहयोग एवं सद्भावना के द्वारा ये प्रभु यीशु मसीह की ज्‍योति से अपने परिवार, कलीसिया एवं समाज को आलोकित

12 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

करेंगे।

प्रतीकात्‍मक रूप से इस अभिप्राय को प्रकट करते हुए ये अपनी-अपनी मोमबत्‍ती से एकता की मोमबत्‍ती जला दें और अपनी-अपनी मोमबत्तियां बुझा दें।

बाइबिल पाठ- (पवित्र शास्‍त्र में से विवाह के विषय में कुछ प्रमुख सन्‍दर्भ का पठन किया जाएगा।
‘‘

इस कारण पुरूष अपने माता पिता से अलग होकर

13 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

अपनी पत्‍नी के प्रति आसक्‍त होगा और वे दोनों एक तन होंगे? फलत: अब वे दो न‍हीं; परन्‍तु एक तन हैं। इसलिए जिसे परमेश्‍वर ने जोड़ा है, उसे कोई मनुष्‍य अलग न करे।
’’

(मत्‍ती 19:5-6)
‘‘

जो पत्‍नी पाता है, वह उत्‍तम वस्‍तु पाता है, और यहोवा से अनुग्रह प्राप्‍त करता है।
’’

(नीतिवचन 18:22)

14 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -
‘‘

भली पत्‍नी कौन पा सकता है? उसका मूल्‍य तो मूँगों से भी बढ़कर है। उसके पति के मन में उसके प्रति विश्‍वास है, और उसे लाभ की घटी न होगी। वह अपने जीवन के सारे दिनों में उसके प्रति बुरा नहीं पर भला ही व्‍यवहार करती है। वह ऊन और सन ढूंढ़ती है, और हर्ष के साथ अपने हाथों से काम करती है।
’’

(नीतिवचन 31:10-13)

15 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -
‘‘

वह अपनी ग्रहस्‍थी के सब मामलों पर ध्‍यान रखती, और परिश्रम किये बिना रोटी नहीं खाती। उसके बच्‍चे उठकर उसे धन्‍य कहते हैं। उसका पति भी यह कह कर उसकी प्रशंसा करता है : बहुत-सी स्‍त्रि‍यों ने अच्‍छे-अच्‍छे कार्य तो किये हैं, परन्‍तु तू उनमें से श्रेष्‍ठ है। आकर्षण तो झूठा और सुन्‍दरता व्‍यर्थ है, परन्‍तु जो स्‍त्री

16 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

यहोवा का भय मानती है, उसी की प्रशंसा होगी। उसके हाथों का फल उसे दो, और नगर-द्वारों में उसके कार्यो से उसकी प्रशंसा हो।
’’

(नीतिवचन 31:27-31)
‘‘

परन्‍तु जिनमें आत्‍मा का कुछ प्रभाव रह गया है उनमें से एक ने भी ऐसा नहीं किया। और ऐसों ने परमेश्‍वर का भय मानने वाली

17 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

सन्‍तान पाने के लिए किया? इसलिए तुम में से कोई अपनी जवानी की पत्‍नी से विश्‍वास घात न करे।
’’

(मलाकी 2:15)

‘‘

अकेले व्‍यक्ति पर कोई तो प्रबल हो सकता है, परन्‍तु दो

18 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

होने से वे उसका सामना कर सकते हैं। तीन लड़ि‍यों से बंटी रस्‍सी जल्‍दी नहीं टूटती।
’’

(सभोपदेशक 4:12)
‘‘

हे पतियो, अपनी अपनी पत्‍नी से प्रेम करो जैसा मसीही ने भी कलीसिया से प्रेम किया और

19 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

अपने आप को उसके लिए दे दिया। कि उस को वचन के द्वारा जल के स्‍नान से शुद्ध करके पवित्र बनाए, और उसे एक ऐसी महिमायुक्‍त कलीसिया बनाकर प्रस्‍तुत करे, जिसमें न कंलक, न झुर्री, न इनके समान कुछ हो, वरन् पवित्र और निर्दोष हो। इसी प्रकार उचित

20 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

है कि पति भी अपनी पत्‍नी से अपनी देह के समान प्रेम करे। जो अपनी पत्‍नी से प्रेम करता है वह स्‍वयं अपने आप से प्रेम करता है। कोई अपनी देह से घृणा नहीं करता, वरन् उसका पालन-पोषण करता है, जैसे कि मसीह भी कलीसिया का

पालन-पोषण करजा है, क्‍योंकि

21 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

हम उसकी देह के अंग हैं। अत: मनु्ष्‍य अपने माता-पिता को छोड़कर अपनी पत्‍नी से मिला रहेगा और वे दानों एक तन होंगे। यह रहस्‍य तो महान् है पर मैं य‍ह बात मसीह और कलीसिया के सदर्भ में कह रहा हूं। अत:तुम में से प्रत्‍येक अपनी पत्‍नी से अपने समान

22 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

प्रेम करे, और पत्‍नी भी अपने पति का भय माने।
’’

(इफिसियों 5:25-33।
‘‘

इसी प्रकार, हे पत्नियों, अपने अपने पति के अधीन रहो जिस से यदि उनमें से कुछ वचन का पालन न करते हों तो वे

23 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

तुम्‍हारे पवित्र और सम्‍मानीय चाल-चलन को ध्‍यानपूर्वक देखकर वचन बिना ही अपनी-अपनी पत्नियों के व्‍यवहार से जीते जाएं । तुम्‍हारा श्रंगार केवल दिखावटी न हो, जैसे बालों को गूंथना, सोने के आभूषण, और विभिन्‍न प्रकार के वस्‍त्र

24 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

पहिनना, वरन् यह तुम्‍हारा आंतरिक व्‍यक्तित्‍व हो, जो नम्र और शान्‍त मन वाले अविनाशी आभूषणों सुसज्ज्ति हो, जिसका परमेश्‍वर में की दृष्टि में बड़ा मूल्‍य है। क्‍योंकि पूर्वकाल में पवित्र स्‍त्रि‍यां भी
जो परमेश्‍वर में आशा

25 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

रखती थीं अपने अपने पति के आधीन रहकर अपने को इसी रीति से सजाती-संवारती थीं। इस प्रकार सारा, इब्राहीम को स्‍वामी कहकर उसके आधीन रहती थी। यदि तुम भी बिना भयभीत हुए वही करो जो उचित है तो उसकी बेटियां ठहरोगी। इसी प्रकार, हे

26 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

पतियों, तुम में से प्रत्‍येक अपनी पत्‍नी के साथ समझदारी से रहे, उसे निर्बल पात्र जाने, क्‍योंकि वह स्‍त्री है। वह जीवन के अनुग्रह में संगी वारिस जान कर आदर करे, जिस से तुम्‍हारी प्रार्थना में बाधा न पहुंचे।

27 / 455

द्वारा लखिति डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन् दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

,,

(पतरस 3:1-7)

संदेश -

इस विधि से

संबंधित संदेशों

के लिए

विवाह से

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

संबंधित संदेश – 1

संदर्भ : इफिसियों 5:22-25

29 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

भूमिकाः- परमेश्‍वर के वचन में आदर्श मसीही परिवार का समीकरण बहुत स्‍पष्‍ट बताया गया है। किसी भी समीकरण में जोड़ने, घटाने, गुणा करने

30 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

अथवा भाग देने की बात होती है उसी प्रकार मसीही परिवार में भी यही

आधारभूत बातें लागू होती हैं।

31 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

1. जोड़ना या

एडीशन (Addition):- मसीही परिवार में मात्र पति-पत्‍नी ही नहीं किन्‍तु सर्वप्रमुख परमेश्‍वर होता है। परमेश्‍वर हमारे जीचनों

32 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

और परिवारों में प्रथम स्‍थान चाहता है। जहां परमेश्‍वर का प्रथमा स्‍थान होता है वहां संबंधों में परिपक्‍वता एवं स्‍थायित्‍व होता है।

33 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

सभोपदेशक 4:12 में लिखा हुआ है कि ‘‘अकेले व्‍यक्ति पर कोई तो प्रबल हो सकता है, परन्‍तु दो होने से वे उसका सामना कर सकते

हैं। तीन लड़ि‍यों से बंटी रस्‍सी जल्‍दी नहीं
34 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

टूटती।
’’

मसीही परिवार में तीन डोरियां परमेश्‍वर,

35 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

पति-पत्‍नी के रूप में होती है। अतः मसीही पिरवार के समीकरण में

पहला सूत्र यही है कि हमें परिवार में परमेश्‍वर को जोड़ना है। परमेश्‍वर को

36 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

जोड़ने का अर्थ है कि प्रतिदिन का प्रारंभ प्रार्थना एवं वचन के मनन से हो, प्रति सप्‍ताह का प्रारम्‍भ कलीसिया की आराधना में उपस्थित होने से हो

37 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

और प्रत्‍येक माह का प्रारम्‍भ परमेश्‍वर के अनुसार अपनी आय का कम से कम दशमाशं भेंट के रूप में अर्पित करने से हो। वचन में

लिखा है ‘‘तू सम्‍पूर्ण

38 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

ह्रदय से यहोवा पर भरोसा रखना, और अपनी समझ का सहारा न लेना। उसी को स्‍मरण करके अपने सब कार्य करना, तब वह तेरे लिए सीधा मार्ग निकालेगा।

39 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

अपनी दृष्टि में तू बुद्धि‍मान न बनना। यहोवा का भय मानना, और बुराई से विमुख रहना। ’’ (नीतिवचन 3:5-7)

40 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

‘‘एक से दो अच्‍छे हैं, क्‍योंकि उनको उनके परिश्रम का अच्‍छा प्रतिफल मिलता है। क्‍योंकि यदि उनमें से एक गिरे तो दूसरा अपने साथी को उठाएगा।

41 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

परन्‍तु उस पर हाय कि जब वह अकेला गिरे तो उसको उठाने वाला कोई दूसरा न हो। अकेले व्‍यक्ति पर कोई तो प्रबल हो सकता है, परन्‍तु दो होने से
42 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

वे उसका सामना कर सकते हैं। तीन लड़ि‍यों से बंटी रस्‍सी जल्‍दी नहीं टूटती। ’’ (सभोपदेशक 4:9-10,12)
43 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

2. घटाना या सब्‍सट्रेक्

‍शन (Subs traction):- मसीही विवाह के समीकरण का दूसरा

44 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

सूत्र है कि हमें अपने परिवार से नकारात्‍मक बातों को घटाना है। दूसरों की कमज़ोरियां बहुत आसानी से दिखाई देती हैं, और

45 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

संसार में रहते हुए नकारात्‍मक मानसिकता का परिवाद है। मसीही परिवार को सुदृढ़ बनाने के लिए आवश्‍यक है कि हम

46 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

अपने चिन्‍तन में नकारात्‍मक बातों को आने न दें। इसलिए पौलुस फिलिप्पियों की पत्री में 4:8 में लिखता है कि

47 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

‘‘

अतः हे भाइयों, जो जो बातें सत्‍य हैं, जो जो बातें आदरणीय हैं, जो जो बातें न्‍यायसंगत हैं, जो

48 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

जो बातें मनोहर हैं, जो जो बातें मनभावनी हैं, अर्थात् जो जो उत्तम तथा प्रशंसनीय गुण हैं, उन्‍हीं का ध्‍यान किया करो।

49 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

’’

3. गुणा करना या

50 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

मल्‍टीप्‍ल

ीकेशन (Multiplicatio n) :- मसीह परिवार के समीकरण में तीसरा

51 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

प्रमुख सूत्र प्रेम को गुणित अनुपात में बढ़ाने का है। प्रेम को परि‍भाषित करना आसान नहीं है। प्रेम का

52 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

सर्वोत्‍कृष्‍ट विवरण परमेश्‍वर के वचन में

1कुरि‍न्थियों 13:4-8 में पाया जाता है। जहां इस

53 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

प्रकार लिखा है कि

‘‘

प्रेम धैर्यवान है, प्रेम दयालु है और वह ईर्ष्‍या नहीं

54 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

करता। प्रेम डींग नहीं मारता, अहंकार नहीं करता। अभद्र व्‍यवहार नहीं करता, अपनी भलाई नहीं चाहता,

55 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

झुंझलाता नहीं, बुराई का लेखा नहीं रखता, अधर्म से आनन्दित नहीं होता, परन्‍तु सत्‍य से आनन्दित होता है। सब बातें

56 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

सहता है, सब बातों पर विश्‍वास करता है, सब बातों की आशा रखता है, सब बातों में धैर्य रखता है। प्रेम कभी मिटता
57 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

नहीं। नबूवतें हों तो समाप्‍त हो जाएंगी, भाषाएं हों तो जाती रहेगीं, और ज्ञान हो तो लुप्‍त हो जाएगा।

58 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

’’

यदि हम वास्‍तव में प्रेम करते हैं तो हममें यह सारे गुण
59 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

अर्थात् कृपालु,

धैर्यवान, घमंड रहित, सहनशील, संयमी और सत्‍यता पर चलने

60 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

वाला, होना चाहिए। इन्‍हीं बातों में आगे बढ़कर हमारा प्रेम परिपक्‍क होता है।

61 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

प्रभु यीशु मसीह ने स्‍वयं का उदाहरण देते हुए कहा कि पति को पत्नि से वैसा प्रेम रखना

62 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

चाहिए जैसा स्‍वयं उसने कलीसिया से रखा कि कलीसिया के लिए अपना सर्वस्‍व

63 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

न्‍योछावर कर दिया। वचन में लिखा है ‘‘हे पत्नियों, अपने अपने पति के ऐसे

64 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

अधीन रहो जैसे कि प्रभु के अधीन हो। क्‍योंकि पति तो पत्नि का सिर है, जिस प्रकार मसीह

65 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

भी कलीसिया का

सिर है और स्‍वयं देह का उद्धारकर्त्ता है। पर जैसे कलीसिया

66 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

मसीह के अधीन है, वैसे ही पत्नियां भी हर बात में अपने अपने पति के अधीन रहें। हे पतियों,

67 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

अपनी अपनी पत्नि से प्रेम करो जैसा मसीह ने भी कलीसिया से प्रेम किया और अपने

68 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

आप को उसके लिए दे दिया कि उस को वचन के द्वारा जल के स्‍नान से शुद्ध करके पवित्र बनाए,

69 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

और उसे एक ऐसी महिमायुक्‍त कलीसिया बनाकर

प्रस्‍तुत करे, जिसमें न कलंक, न

70 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

झुर्री, न इनके समान कुछ हो, वरन् पवित्र और निर्दोष हो। इसी प्रकार उचित है कि पति भी

71 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

अपनी पत्नि से अपनी देह के समान प्रेम करे। जो अपनी पत्नि से प्रेम करता है वह

72 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

स्‍वयं अपने आप से प्रेम करता है। अतः तुम में से प्रत्‍येक अपनी पत्नि से अपने

73 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

समान प्रेम करे, और पत्नि भी अपने पति का भय माने।
’’

74 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

(इफिसियों 5:22-29,33)
4. भाग देना या डिवीज़न

75 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

(Division):-
मसीही परिवार का

चौथा प्रमुख सूत्र है भाग देना या

76 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

डिवीज़न। सभोपदेशक 4:9-10 में लिखा है
‘‘

77 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

एक से दो अच्‍छे हैं, क्‍योंकि उनको उनके परिश्रम का अच्‍छा प्रतिफल मिलता है।

78 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

क्‍योंकि यदि उनमें से एक गिरे तो दूसरा अपने साथी को उठाएगा। परन्‍तु उस पर

79 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

हाय कि जब वह अकेला गिरे तो उसको उठानेवाला कोई दुसरा न हो।
’’

80 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

परमेश्‍वर की दृष्टि में मनुष्‍य का अकेले रहने से बेहतर दो लोगों का साथ है। आज के

81 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

संसार में अकेलापन एक बड़ी समस्‍या है। जीवन में हमको बांटना सीखना है,

82 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

अपनी

ज़ि‍म्‍मेदारियों को हमें एक-दूसरे के साथ बांटना सीखना है।

83 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

निष्‍कर्षः-
मसीही परिवार में ज़ि‍म्‍मेदारियों को समुचित रूप से

84 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

बांटना है। किसी ने कहा है कि पिता का प्रमुख कार्य राह बनाना होता है और मां का कार्य

85 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

राह पर बच्‍चों को चलना सिखाना

होता है। क्‍या एक पहिये से कोई गाड़ी चल सकती

86 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

है? क्‍या एक पंख से कोई प्राणी उड़ सकता है? क्‍या एक हाथ से कोई भारी वस्‍तु

87 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

उठा सकता है? क्‍या एक हथेली से कोई कर्तल ध्‍वनि निकाल सकता है?

88 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

पति-पत्नि को जीवन के

दुःख-सुख में

साथ चलना

सीखना है।

89 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

आधुनिक यूगा में आज की कहानियां, चल-चित्र, टेलीविज़न के सीरियल संभवतः

90 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

परिवार का सही चित्र प्रदर्शित करने में असफल रहे हैं। एक आदर्श मसीही

91 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

परिवार का सही चित्र वचन में मिलता है। परमेश्‍वर के वचन के अनुसार

92 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

ही मसीही परिवार

का निर्माण और विकास होना चाहिए। इसलिए लिखा है

93 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

‘‘

एक दुसरे का भार उठाओ और इस प्रकार मसीह की व्‍यवस्‍था को

94 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

पूर्ण करो।
’’

(गलतियों 6:2)

विवाह से

95 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

संबंधित संदेश – 2

96 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

संदर्भः भजन संहिता 127:1

97 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

भूमिकाः- मसीही परिवार के निर्माण की बात घर बनाने से किन्‍हीं मायनों
98 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

में समान है। वि‍वाह के

अवसर पर

जब हम एक

99 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

परिवार की

स्‍थापना की बात करते हैं तो हमको घर बनाने से जुड़ी हुई इन
100 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

बातों की ओर

ध्‍यान देना है जो कि एक मसीही परिवार को बनाने के लिए भी

101 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

आवश्‍यक हैं।
1. किसी भी घर के निर्माण की पहली

102 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

बात उसकी बुनियाद होती है
।
उसी

103 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

प्रकार मसीही परिवार का आधार परमेश्‍व

104 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

र हैः- परिवार में परमेश्‍वर का स्‍थान प्रथम होना चाहिए।

105 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

परमेश्‍वर ने जब मूसा को दस आज्ञाएं दीं तो उसमें पहली आज्ञा थी,
106 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

‘‘

तू मुझे छोड़ दुसरों को ईश्‍वर करके न मानना।

107 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

’’

परिवार में परमेश्‍वर को प्रथम स्‍थान देने का अर्थ है
108 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

प्रतिदिन सुबह प्रार्थना के द्वारा उसे पहला स्‍थान देना। प्रत्‍येक
109 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

सप्‍ताह के प्रथम दिन कलीसिया के साथ सहभागिता

करना। प्रत्‍येक
110 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

माह अपनी आमदनी का पहला भाग

परमेश्‍वर को देना। जब

111 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

परिवार के प्रत्‍येक आयाम में परमेश्‍वर का स्‍थान प्रथम होगा तो उससे

112 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

यह प्रकट होगा कि उस परिवार की बुनियाद परमेश्‍वर है। लिखा है,
113 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

‘‘

यदि घर को यहोवा ही न बनाए, तो बनाने वाले व्‍यर्थ
114 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

परिश्रम करते हैं। जब तक यहोवा ही नगर की रक्षा न करें, तो पहरेदार का

115 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

जागना व्‍यर्थ है।
’’

(भजन संहिता 127:1)
116 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

2. घर के निर्माण की दूसरी प्रमुख बात उसकी

117 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

मज़बूत दीवारें होती हैं ।
उसी

118 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

प्रकार मसीही परिवार की
दीवारों

119 / 455

द्वारा लखिति डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन् दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

की

मज़बूती

के लिए

प्रेम

ज़रूरी

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

हैः-

घर की बुनियाद रखने के बाद दीवारें खड़ी होती हैं। दीवार चाहे
121 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

पत्‍थर की हो या ईट की इनकी मज़बूती के लिए सीमेंट ज़रूरी होता है उसी
122 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

तरह मसीही परिवार में स़बंधों की दीवारों की मज़बूती के लिए प्रेम ज़रूरी होता
123 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

है। 1कुरिन्थियों 13:4-7 में लिखा है
‘‘

प्रेम
124 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

धीरजवन्‍त है, और कृपाल है ;
प्रेम डाह नहीं

करता

125 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

;
प्रेम अपनी बढ़ाई नहीं करता, और फूलता नहीं। वह
126 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

अनरीति नहीं चलता, वह अपनी भलाई नहीं चाहता, झुंझलाता नहीं,
127 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

बुरा नहीं मानता। कुकर्म से आनन्दित नहीं होता, परन्‍तु सत्‍य
128 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

से आनन्दित होता है। वह सब बातों की

प्रतीति करता है, सब बातों की

129 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

आशा रखता है, सब बातों में

धीरज धरता है।
’’

प्रेम ही
130 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

व्‍यक्ति को जोड़ता है, प्रेम ही व्‍यक्ति को बढ़ाता है, उसे सम्‍भालता है,
131 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

संवारता है, टूटने से बचाता है। प्रेम ही व्‍यक्ति की शक्ति होता है।
132 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

जिस प्रकार पानी सीमेंट को

मज़बूती देता है उसी प्रकार प्रेम के साथ क्षमा
133 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

आवश्‍यक है। क्षमा के बिना कोई भी संबंध मज़बूत नहीं हो सकता।
134 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

3. घर के निर्माण की तीसरी प्रमुख बात घर की
135 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

छत होती है, उसी प्रकार मसीही परिवार
136 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

की छत वचन होना चाहिएः- घर की छत

व्‍यक्ति को
137 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

सुरक्षा देती है। छत उसे धूप, बारिश, आंधी, तूफान से बचाती है।
138 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

व्‍यवस्‍थावि

वरण 6:6-8 में लिखा है
‘‘

और ये
139 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

आज्ञाएं जो मैं आज तुझ को सुनाता हूं वे तेरे मन में बनी रहें ;
140 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

और तू इन्‍हें अपने बालबच्‍चों को

समझाकर

सिखाया करना,
141 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

और घर में बैठे, मार्ग पर चलते, लेटते, उठते, इनकी चर्चा किया करना और
142 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

इन्‍हें अपने

हाथ पर

चिन्‍हानी करके बांधना, और ये तेरी आंखों के
143 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

बीच टीके का काम दें।
’’

शैतान

144 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

कठिनाईयों, दुःख, पीड़ा, विछोह, परीक्षाओं और

145 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

आलोचना के द्वारा परिवार पर आक्रमण

करेगा परन्‍तु

146 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

वचन हमारे विरोधी शैतान से हमको बचाएगा। इस

147 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

कारण परिवार में प्रतिदिन वचन का पठन हो। नीतिवचन

148 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

13:13 में लिखा है

‘‘

149 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

जो वचन को तुच्‍छ जानता, वह नाश हो जाता है,

150 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

परन्‍तु आज्ञा के डरवैय्ये को अच्‍छा फल

151 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

मिलता है।
’’

4. घर की सुरक्षा

152 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

के लिए दरवाज़े होते हैं उसी

153 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

प्रकार मसीही परिवार में

154 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

सीमाएं दरवाज़ों के समान

155 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

होती हैं:- दरवाज़े कमरों की, घर की सीमा

156 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

पर होते हैं। जो घर की सीमाओं के रूप में कार्य में करते हैं, उसी

157 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

प्रकार मसीही परिवार के लिए भी परमेश्‍वर ने कुछ सीमाएं

158 / 455

विवाह की विधि

द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

बनाई हैं।

159 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

नीतिवचन 12:4 में पत्नि के लिए लिखा है ‘‘

भल

160 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

ी स्‍त्री अपने पति का मुकुट है, परन्‍तु जो लज्‍जा के

161 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

काम करती वह मानो उसकी हड्डियों के सड़ने का कारण

162 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

होती है।
’’

नीतिवचन

6:27-29 में

163 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

पति के लिए

लिखा है
‘‘

क्‍या हो सकता

164 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

है कि कोई अपनी छाती पर आग रख

ले

165 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

;
और उसके कपड़े न जलें? क्‍या हो सकता

166 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

है कि कोई अंगारे पर चले, और उसके पांव न झुलसें? जो

167 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

पराई स्‍त्री के पास जाता है, उसकी दशा ऐसी है

168 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

;
वरन् जो कोई उसके छुएगा वह दण्‍ड से

169 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

ने बचेगा।
’’

इस कारण मसीही परिवार

170 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

की मज़बूती के लिए

आवश्‍यक है कि पति पत्नि

171 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

एवं परिवार का प्रत्‍येक सदस्‍य इन सीमाओं के

172 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

भीतर रहकर जीवन में आगे बढ़े।
5. घर की

173 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

सुन्‍दर ता दीवारों पर किए

174 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

गए रंगों से बढ़ती

175 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

है उसी प्रकार मसीही परिवार

176 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

की सुन्‍दर ता परिवार

177 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

में आत्‍मा के फलों से

178 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

प्रदर्श ित होती हैः-
एक सुन्‍दर

179 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

मसीही परिवार में आत्‍मा के फलों का पाया

जाना ज़रूरी

180 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

है। ये आत्‍मा के फल हैं
;

181 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

‘‘

आत्‍मा का फल प्रेम, आनन्‍द,

182 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

मेल, धीरज, कृपा, भलाई, विश्‍वास, नम्रता, और
183 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

संयम हैं
;
ऐसे ऐसे कामों के विरोध में

184 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

कोई भी व्‍यवस्‍था नहीं। और जो मसीह यीशु के

185 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

है, उन्‍होंने शरीर को उस की लालसाओं और

186 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

अभिलाषाओं समेत क्रूस पर चढ़ा दिया है।
’’

187 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

(गलतियों 5:22-24) मसीही परिवार

में प्रत्‍येक
188 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

समय

अच्‍छी बातों, अच्‍छे
189 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

विचारों, अच्‍छे कार्यो की ओर ध्‍यान होना
190 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

चाहिए।

क्‍योंकि पेड़ अपने फलों के

द्वारा पहचाना

191 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

जाता है। फिलिप्‍पयों 4:8 में लिखा है

192 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

‘‘

निदान, हे भाइयो, जो जो बातें सत्‍य हैं
193 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

;
और जो जो बातें आदरणीय है

194 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

;
और जो जो

बातें पवित्र हैं, और जो
195 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

जो बातें

सुहावनी हैं, और जो जो

बातें उचित हैं,
196 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

और जो जो बातें मनभावनी

हैं, निदान, जो जो सद्गुण
197 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

और प्रशंसा की बातें है उन्‍हीं पर ध्‍यान
198 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

लगाया करो।
’’

199 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

निष्‍क र्षः- ज

ब आज वर

और वधु
200 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

विवाह के इस बंधन में बांधे गए हैं। इनके द्वारा एक
201 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

मसीही परिवार

की स्‍थापना आज हुई है। अतः ये पाचों

202 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

बातें इनके परिवार में पाई जाएं ताकि इस सुन्‍दर
203 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

मसीही परिवार को देखकर लोग
परमेश्‍वर की
204 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

आशीषों एवं

उपस्थिति का अनुभव कर सकें।

205 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

विवाह संबंधित

206 / 455

द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्□दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

□□□□□ - 3

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

सन्‍दर् भ : भजन संहिता

127:1-5;
208 / 455

द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्□दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

□□□□□□□ □

5:22-25

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

भूमिका

ः- परमेश्‍ वर ने

आरंम्‍भ में
210 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

सृष्टि की सृजना की और उसके

बाद आदम व

211 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

हव्‍वा का निर्माण किया।

आदम-हव्‍
212 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

वा ने अदन की वाटिका में परमेश्‍वर की आज्ञा
213 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

तोड़ी और वर्जित फल खाया।

परमेश्‍वर
214 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

उन पर

क्रोधित हुआ और उन्‍हें अदन की
215 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

वाटिका से निकाल दिया गया। परन्‍तु
216 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

परमेश्‍वर ने आदम और हव्‍वा द्वारा अपनी
217 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

आज्ञा को तोड़े जाने के बावजूद

उन्‍हें सज़ा
218 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

देने के बाद भी आशीषित किया और उन दोनों के द्वारा
219 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

संसार की

सबसे प्रमुख और प्राथमिक
220 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

इकाई के रूप में

‘‘

परिवार

221 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

’’

कर जन्‍म हुआ।

222 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

परिवार सृष्टि के प्रारंभ से ही
परमेश्‍वर
223 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

की आशीषों

को प्राप्‍त

करता रहा

है। परिवार
224 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

समाज की एक बहुत ही महत्‍वपूर्ण इकाई है।
225 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

बाईबिल में

हम

पति-पत्नि तथा परिवार
226 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

के संबंध में बहुत सी बातों का वर्णन पाते
227 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

हैं। पति एवं पत्नि को परिवार का संचालन करने
228 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

के लिए बहुत से निर्देश दिये गये हैं। संतानों को भी
229 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

बहुत सी आज्ञाएं दी गई हैं। बाईबिल में
230 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

बहुत से ऐसे आशीषित परिवारों का

वर्णन पाया
231 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

जाता है, जिन्‍होंने परमेश्‍वर की अगुवाई
232 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

एवं सहभागिता में

चलते हुए अनेक
233 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

आदर्श

स्‍थापित किये एवं जिनका
234 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

अनुकरण करना आज

भी आशीषों

का स्‍त्रोत
235 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

माना जाता

है। इस संबंध में कुछ बातों को हम
236 / 455

द्वारा लखिति डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्□दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

देखें□

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

1. परिवार का आधार प्रभु
238 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

यीशु होः- भजन संहिता 127 के पहले तथा
239 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

दूसरे पद में लिखा है

;
‘‘

240 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

यदि घर को यहोवा न बनाए तो बनाने वाले
241 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

व्‍यर्थ परिश्रम करते हैं। जब तक यहोवा ही
242 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

नगर की रक्षा न करे तो पहरेदार का

जागना

243 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

व्‍यर्थ है। तुम्‍हारा तड़के उठना, देर से
244 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

विश्राम करना और परिश्रम की रोटी खाना तुम्‍हारे
245 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

लिए

व्‍यर्थ है क्‍योंकि, वह अपने प्रियों
246 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

को यूं ही नींद

प्रदान करता है
’’

247 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

।

डॉक्‍टर बिली ग्राहम
248 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

ने अपनी पुस्‍तक में लिखा है; ‘

249 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

‘

मानसिक रोगों से ग्रसित

250 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

80% लोगों की बीमारी का मूल कारण

251 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

अकेलापन है
’’

।

252 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

यदि परिवार को
परमेश्‍वर

253 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

की आशीषों

का कारण

ठहराना है

254 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

तो अपने परिवार में परमेश्‍वर

255 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

को अपना केन्‍द्र बनाना है।

256 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

अपने पा‍रिवारिक जीवन का

257 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

आधार

परमेश्‍वर को बनाना

258 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

है। जब परिवार के सम्‍मुख

259 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

कठिनाइयां, संघर्ष आएं तो उनके

260 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

समाधान कके लिए परमेश्‍वर

261 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

की ओर देखना है। समस्‍याओं

262 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

का हल

परमेश्‍वर से हासिल

263 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

करना है क्‍योंकि उसी ने

264 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

परिवार

बनाया है।

265 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

2. परिवार का

266 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

उद्देश्‍य चरित्र

267 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

-निर्माण होः- विवाह का

268 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

उद्देश्‍य होता है वंश को बढ़ाना

269 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

परन्‍तु विवाह के बाद

270 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

स्‍थापित परिवार का

उद्देश्‍य

271 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

बच्‍चों का चरित्र निर्माण होना

272 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

चाहिए। भजन संहिता 127 के

273 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

तीसरे व चौथे पद में लिखा है;

274 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

‘‘

देखो, बच्‍चे

275 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

यहोवा के दिए हुए दान हैं,

276 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

गर्भ का फल उसकी ओर से प्रतिफल

277 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

है, जैसे वीर के हाथ में तीर, वैसे ही

278 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

जवानी की संतान होती है।

279 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

’’

परिवार में संतानें,

280 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

परमेश्‍वर के दिये हुए भाग हैं।

281 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

इब्रानी

भाषा में
‘‘

282 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

भाग

’’

शब्‍द के

283 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

लिए इस्‍तेमाल किये गये

284 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

शब्‍द का

अर्थ
‘‘

285 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

धरोहर
’’

होता है

286 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

अर्थात्

बच्‍चे परमेश्‍वर

287 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

की धरोहर हैं।
परमेश्‍वर

288 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

कहता है कि ये बच्‍चे मेरी धरोहर

289 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

हैं और तुम इनके भण्‍डारी

290 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

हो, तुम्‍हें एक दिन इनके लिए

291 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

लेखा देना पड़ेगा। अतः

292 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

माता-पिता इस प्रकार इस इनको

293 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

विकसित करें कि ये सही दिशा जाएं,

294 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

सही निशाने पर बैठें और इनके

295 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

जीवन

परमेश्‍वर की योजना

296 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

को पूरा करने वाले हों। किसी ने कहा

297 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

है
‘‘

इससे पहले

298 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

कि हम अपने बच्‍चों को

299 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

डॉक्‍टर, इंजीनियर, प्रोफेसर

300 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

बनायें, हमें उन्‍हें सच्‍चा

301 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

और अच्‍छा मसीही

302 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

बनाना हैं।
’’

एक मसीही

303 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

परिवार का

आधार.

उसका

304 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

केन्‍द्र प्रभु यीशु मसीह होना

305 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

चाहिए और परिवार का

उद्देश्‍य

306 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

चरित्र निर्माण होना

307 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

चाहिए। 3.
परिवा

308 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

र की कार्य विधि

309 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

प्रेम होः- परमेश्‍वर

310 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

ने परिवार के पति-पत्‍नी दोनों ही

311 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

को
भिन्‍न-भि न्‍न

312 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

भूमिकाएं सौंपी हैं, उनके

313 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

अलग-अल

ग

उत्तरदायि

314 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

त्‍व हैं ; परिवार में

315 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

उनके

अलग-अल

ग स्‍थान

316 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

हैं, स्थिति है। जैसे इफिसियों की

317 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

पत्री में लिखा है ;

318 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

‘‘

हे पत्नियों, अपने अपने

319 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

पति के अधीन रहो जैसे कि

320 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

प्रभु कि प्रभु के अधीन हो।

321 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

क्‍योंकि पति तो

पत्नि का

322 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

सिर है, जिस प्रकार मसीह भी

323 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

कलीसिया का सिर है और स्‍वयं देह

324 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

का

उद्धारकर्त् ता है। पर

325 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

जैसे कलीसिया मसीह के

326 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

अधीन है वैसे ही पत्नियां भी

327 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

हर बात में अपने-अपने पति के

328 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

अधीन रहें। हे पतियों,

329 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

अपनी अपनी

पत्‍नी से

330 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

प्रेम करो जैसा मसीह ने भी

331 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

कलीसिया से प्रेम किया और अपने

332 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

आपको उसके लिए दे दिया।

333 / 455

,,

(इफिसियों

5:22-2

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

5)
वचन

स्‍पष्‍ट
335 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

बताता है कि पति

पत्नि सिर

336 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

है, परिवार का प्रमुख है।

337 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

पत्‍नी को परमेश्‍वर ने पति के

338 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

अधीन बनाया

परन्‍तु
339 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

इसका यह

अर्थ नहीं कि ग़लत

340 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

बात और

ग़लत कार्य

में पत्‍नी
341 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

पति को सहयोग दे।

342 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

परन्‍तु परिवार में यदि पति

343 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

अविश्‍वा सी हो तो

पत्‍नी
344 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

अपने

विश्‍वास में बनी रहे

345 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

और अपने

विश्‍वास और प्रेम
346 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

से पति को जीतने का

प्रयत्‍न
347 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

करे। पति के लिए

निर्देश है
348 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

कि अपनी देह के

समान

349 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

अपनी

पत्‍नी से प्रेम रखे।
350 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

परिवार को

अच्‍छी तरह से

351 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

चलाने की

प्रमुख कुंजी,
352 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

मुख्‍य शब्‍द
‘‘

353 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

प्रेम
’’

है।

354 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

क्‍योंकि ;
प्रेम हरेक
355 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

बात सह

लेता है, प्रेम में
356 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

सहनशीलता का गुण होता है।

357 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

जब परिवार में

पति-पत्नि

358 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

के बीच

प्रेम होता है तो वे

359 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

एक दूसरे को

प्रोत्‍साहि
360 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

त करने में आगे बढ़ते हैं,
361 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

प्रत्‍येक समस्‍या ओं,

362 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

कठिनाइयों, अच्‍छे पलों में

363 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

सम्‍पूर्ण ह्रदय से सहभागी

364 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

होते हैं और प्रेम के कारण ही

365 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

उनमें एक

दूसरे के प्रति

366 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

विश्‍वास योग्‍य बने रहने की

367 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

भावना

उपजती है।

368 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

यदि परिवार को

सुचारू रूप

369 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

से चलाना है तो उसकी कार्यविधि
370 / 455

द्वारा लखिति डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्□दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

“प्रेम”

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

हो।

निष्‍

372 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

कर्षः
- परिवार

परमेश्‍व
373 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

र की दृष्टि में बहुत महत्‍वपूर्
374 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

ण इकाई है.......
- परिवार

375 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

वह

संस्‍था है जिसे

376 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

परमेश्‍व र ने

स्‍वयं
377 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

स्‍थापित किया है।

- वह

378 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

कार्यशाला

है, जहां चरित्र का
379 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

निर्माण होता।
- वह

380 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

द्वार है जहां कुछ ताले खुलते
381 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

हैं, कुछ बंद हो जाते हैं।
382 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

- वह

शरण

स्‍थान है
383 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

जहां तूफानों में सहारा मिलता है।
384 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

- वह

रास्‍ता है
385 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

जो

स्‍वर्ग में

जाकर

386 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

समाहित हो जाता है। इसी कारण

387 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

यदि हम चाहते हैं कि हमारा

388 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

परिवार

परमेश्‍व र की

389 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

आशीषों को

प्राप्‍त करे तो

390 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

;
- हमारे परिवार का

391 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

आधार

प्रभु यीशु होना

392 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

चाहिए।
- हमारे परिवार का

393 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

उद्देश्‍य चरित्र निर्माण
394 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

होना चाहिए।
- हमारे

395 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

परिवार की

कार्यविधि
‘‘

396 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

प्रेम
’’

होनी

397 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

चाहिए। पास्‍ टर-

398 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

जब

वर-वधु

विवाह के
399 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

अभिलेखों

पर

हस्‍ताक्ष
400 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

र करतें हैं

तब हम सब गीत

401 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

क्रमांक

गाएंगे।

402 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

(यदि सूचनाएं हो तो इस
403 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

अवसर पर

प्रसारित की जाएं।

404 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

वर वधु

दोनों पक्षों से 2-2
405 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

गवाह

अभिलेखों

पर

406 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

हस्‍ताक्ष र के लिए

आ

407 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

जाएं।) गीत-होगी

408 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

आशीषों की वर्षा

409 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

1. होगी आशीषों
410 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

की वर्षा प्रेम की प्रतिज्ञा
411 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

को मान होगा समय जीवन

412 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

दायक

ख्रीष्‍ट मुक्तिदाता
413 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

का दान। को:-

वर्षा
414 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

आशीष की

वर्षा
415 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

आशीषों की भेज दया की
416 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

बूंदो टपकती

वर्षा
417 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

आशीषों की भेज।

2. होगी
418 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

आशीषों

की वर्षा

तब नया

419 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

जीवन

प्रबल सभों में
420 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

उत्‍पन्‍ न करेगा

आत्‍मा
421 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

पवित्र का फल।

3. होगी
422 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

आशीषों

की वर्षा आज से
423 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

आरंभ

उनका हो

आज

424 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

अपने पापों को मानो यीशु से
425 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

बिनती करो। अंतिम
426 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

प्रार्थना- परमेश्‍व
427 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

र पिता इन

नव

दम्‍पत्ति
428 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

पर तेरी आशीष

हो-इनके
429 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

जीवनों पर तेरा

अनुग्रह
430 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

हो और इनकी

समझ पर

431 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

पवित्र आत्‍मा

का

432 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

मार्गदर्श

न बना

रहे।
433 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

आमीन! अंतिम आशीष-
434 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

परमेश्‍व र की शांति जो सारी
435 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

समझ से परे है हमारे
436 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

ह्रदय और

तुम्‍हारे
437 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

विचारों को

परमेश्‍व र और
438 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

उसके पुत्र हमारे प्रभु यीशु
439 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

मसीह की

पहचान

और प्रेम
440 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

में स्थिर रखे और

सर्वशक्‍
441 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

तिमान

परमेश्‍व

र पिता,
442 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

परमेश्‍व

र पुत्र और
443 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

परमेश्‍व

र

पवित्रात्
444 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

‍मा की आशीष

तुम्‍हारे
445 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

मध्‍य में

आज

सर्वदा लों
446 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

बनी रहे। आमीन! (वर अपने
447 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

दाहिने हाथ में

वधु का
448 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

बायां हाथ

डालकर

बाहर

449 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

निकलें।

इस समय कलीसिया
450 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

खड़ी होकर

‘‘

451 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

होगी आशीषों की वर्षा
452 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

’’

का पहला

पद तथा

453 / 455

विवाह की विधि
द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्‍दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

कोरस गाएं या कोई धुन बजाई
454 / 455

द्वारा लखिति डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्□दु लाल
गुरुवार, 27 मार्च 2008 21:43 -

जा□)□